

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मसीह का उद्धार कार्य, सत्र 11, उद्धार की घटनाएँ, भाग 3, मुख्य घटनाएँ, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन मसीह के उद्धार कार्यों पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 11, उद्धार घटनाएँ, भाग 3, मुख्य घटनाएँ, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान है।

हम मसीह के उद्धार कार्यों का अध्ययन कर रहे हैं।

हमने दो आवश्यक पूर्वापेक्षाओं की जांच की है, अर्थात् हमारे प्रभु का अवतार और पाप रहित जीवन। अब हम उनकी उद्धारक उपलब्धि में मुख्य घटनाओं की ओर बढ़ते हैं, अर्थात् उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान। मसीह की मृत्यु, मैं जिम पैकर के एक उद्घरण से शुरू करता हूँ, जो हाल ही में अपने प्रभु के पास चले गए।

पापियों के प्रति परमेश्वर का प्रेम उनके उद्धारकर्ता के रूप में उनके पुत्र के उपहार द्वारा व्यक्त किया गया था। प्रेम का माप यह है कि कितना दिया जाता है, यह देता है। और परमेश्वर के प्रेम का माप उसके इकलौते पुत्र का उपहार है जो मनुष्य बना, और पापों के लिए मरा, और इस प्रकार वह एक मध्यस्थ बना जो हमें परमेश्वर के पास ला सकता है।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पौलुस परमेश्वर के प्रेम को महान और असीम ज्ञान के रूप में बताता है। इफिसियों 2, 4, 3, 19. क्या कभी इतनी महँगी उदारता थी? पौलुस तर्क देता है कि यह सर्वोच्च उपहार अपने आप में हर दूसरे उपहार की गारंटी है।

उद्घरण, जिसने अपने निज पुत्र को भी न छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया, वह उसके साथ हमें सब कुछ क्योंकर न देगा? रोमियों 8:32। नए नियम के लेखक लगातार मसीह के क्रूस को परमेश्वर के असीम प्रेम की वास्तविकता के सर्वोच्च प्रमाण के रूप में इंगित करते हैं। जेआई पैकर के शब्द सत्य प्रतीत होते हैं।

जब सुसमाचार मसीह की मृत्यु की घटना को दर्ज करते हैं, तो वे मुख्य रूप से दो पुराने नियम के अंशों का हवाला देते हैं, भजन 22 और यशायाह 53। मैंने अभी-अभी इसका उल्लेख किया है, और मैं मसीह की उद्धारक मृत्यु के छुटकारे के महत्व के बारे में सोचने लगा हूँ। मैं मसीह की उद्धारक उपलब्धि की छह तस्वीरों का पूर्वानुमान लगाना चाहता हूँ, मसीह की उद्धारक उपलब्धि की छह तस्वीरें, जिनके बारे में हम कल बात करेंगे, प्रभु की इच्छा से।

एक और तस्वीर। मैं अभी चित्रों का परिचय दूँगा और प्रत्येक चित्र के लिए एक अंश दूँगा। ओह, मुझे खेद है।

हुह, मैंने आपको वह स्लाइड दी थी। और अब हम आगे बढ़ते हैं। हम इन पर और अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे, लेकिन मुझे लगा कि अब हमारे प्रभु के प्रायश्चित के बारे में सोचते हुए, उन चित्रों को प्रस्तुत करना अच्छा रहेगा।

मसीह हमारा कानूनी विकल्प है। हम एक धर्मी परमेश्वर के सामने व्यवस्था द्वारा दोषी ठहराए गए थे। क्रूस पर मसीह हमारे स्थान पर व्यवस्था का दण्ड भुगतता है ताकि हम न्यायसंगत ठहरें।

यशायाह 53:11, रोमियों 3:25-26, गलातियों 3:13, कुलुस्सियों 2:14, 1 पतरस 3:18, 1 यूहन्ना 2:2 और 4:10. वास्तव में, मैं अभी किसी भी अंश को नहीं खोलूंगा। हम भविष्य में ऐसा करेंगे। मैं केवल विषयों का परिचय दूंगा और अंशों का हवाला दूंगा।

मसीह हमारा विजेता है। शैतान और उसके दुष्टात्माओं ने हमारा विरोध किया, जो हमसे कहीं अधिक शक्तिशाली शत्रु हैं। मसीह अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान में इन शत्रुओं को हराने के लिए हम में से एक बन जाता है।

यशायाह 52:13, 53:12, यूहन्ना 12:31, कुलुस्सियों 2:15, इब्रानियों 2:14 और 15. मसीह हमारा उद्धारक है। शैतान और उसके दुष्टात्माओं ने हमारा विरोध किया।

क्षमा करें, मैंने पहले ही वह कर लिया है। मसीह हमारा उद्धारक है। हम पाप के गुलाम थे, लेकिन मसीह ने अपनी मृत्यु में छुड़ौती की कीमत चुकाकर हमें बंधन से आज़ादी की ओर, पाप के बंधन से छुड़ाया और हमें परमेश्वर के पुत्रों और पुत्रियों की आज़ादी की ओर पहुँचाया।

मरकुस 10:45, लूका 9:31, प्रेरितों के काम 20:28, इफिसियों 1:7. मसीह हमारा मेल-मिलाप कराने वाला है। हम अपने पापों के कारण परमेश्वर से दूर हो गए थे। मसीह परमेश्वर और हमारे बीच शांति स्थापित करने और हमें परमेश्वर के साथ संगति में वापस लाने के लिए मरता है।

रोमियों 5:10. मसीह हमारा दूसरा आदम है। हमारे पहले पिता आदम के पतन में, हमने सम्मान और प्रभुत्व खो दिया और मृत्यु और निंदा के अधीन हो गए। अवतार में, परमेश्वर का पुत्र दूसरा मनुष्य, अंतिम आदम बन जाता है, जो मृत्यु तक अपनी आज्ञाकारिता और अपने पुनरुत्थान के द्वारा सृष्टि के लाभों को पुनर्स्थापित करता है और हमें उचित ठहराता है।

रोमियों 5:18.19, इब्रानियों 2:9. मसीह हमारा बलिदान है। हम पाप से अशुद्ध हो गए थे और परमेश्वर के पास जाने में असमर्थ थे। मसीह, हमारा महान महायाजक, परमेश्वर के लिए एक अद्वितीय बलिदान के रूप में खुद को प्रस्तुत करता है, हमें पाप से शुद्ध करता है और हमें श्रद्धा और साहस के साथ परमेश्वर की उपस्थिति में आने में सक्षम बनाता है।

यशायाह 52:15, 53:10, यूहन्ना 1:29, यूहन्ना 1:36, यूहन्ना 17:19, इफिसियों 5:2. बलिदान का विषय हर जगह है। इब्रानियों 1:3, 2:17, और अध्याय 9 और 10 में भी कई और बातें हैं। 1 पतरस 1:2, 1 पतरस 1:18-19, 1 पतरस 2:24, 1 यूहन्ना 1:7, प्रकाशितवाक्य 1:5, 5:6, 7:12, 12:11, 13:8. मसीह की उद्धारक उपलब्धि की छह प्रमुख तस्वीरें।

छह से ज़्यादा तस्वीरें हैं, लेकिन उनमें से छह मुख्य हैं। और कहीं हम भ्रमित न हो जाएँ, मैं कहना चाहूँगा कि ये छह तस्वीरें वास्तव में एक ही बात कहती हैं। ये छह तस्वीरें कहती हैं कि हम पाप में खो गए थे, और मसीह ने हमें बचाया।

वे इससे अलग कुछ नहीं कहते, लेकिन वे ऐसा कहते हैं। वास्तव में, बाइबल यह भी कहती है कि हम पाप में खो गए थे, और मसीह ने हमें कभी-कभी बचाया। लेकिन यह उसी वास्तविकता का वर्णन करने के लिए इन चित्रों को भी चित्रित करता है।

लोग पाप में खो गए हैं, और परमेश्वर उन्हें मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से बचाता है। मेरा प्रश्न है, चित्रों की इतनी अधिकता क्यों है? हर बार क्यों नहीं कहा जाता कि यीशु ने इन पापियों को उनके स्थान पर मरकर और फिर से जी उठकर बचाया? फिर से, कभी-कभी शास्त्र ऐसा कहता है, लेकिन अक्सर यह इन चित्रों को चित्रित करता है। मैंने जिन आयतों का हवाला दिया है, वे इन विभिन्न विषयों की कई घटनाओं को दर्शाते हैं। मसीह के उद्धार कार्य के चित्रों की बहुलता क्यों है? कुछ उत्तर।

नंबर एक, पाप की तस्वीरों की बहुलता के कारण, हम दोषी ठहराए गए और हमें एक कानूनी विकल्प की आवश्यकता थी। हम हमसे कहीं अधिक बड़ी आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा सताए गए थे और हमें एक चैंपियन की आवश्यकता थी। हम पाप में बंधे हुए थे, पाप के गुलाम थे, और हमें एक मुक्तिदाता की आवश्यकता थी।

हम अपने पापों के कारण परमेश्वर से दूर हो गए थे, और हमें एक शांतिदूत, एक मेल-मिलाप कराने वाले की ज़रूरत थी। आदम के पाप के कारण हम मृत्यु और दण्ड के अधीन थे। हमें दूसरे आदम की ज़रूरत थी जो पहले आदम द्वारा खोई गई चीज़ों को वापस लौटा सके।

हम पवित्र परमेश्वर के सामने अपवित्र थे। कोढ़ की भाषा में कहें तो हम अशुद्ध थे। और मसीह, हमारे महान महायाजक और बलिदान ने हमें शुद्ध करने, हमें पवित्र करने के लिए खुद को परमेश्वर के सामने अर्पित कर दिया।

इसलिए, प्रायश्चित के चित्रों की बहुलता पाप के चित्रों की बहुलता से मेल खाती है। अर्थात्, परमेश्वर पाप को केवल काले और सफ़ेद रंग में नहीं, बल्कि रंगीन रूप में प्रस्तुत करता है, और वह प्रायश्चित को भी उसी रंगीन रूप में प्रस्तुत करता है। दूसरे, मसीह के उद्धार कार्य के चित्रों की बहुलता उस उद्धार कार्य की भव्यता को रेखांकित करती है।

यह अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखा जाना चाहिए कि परमेश्वर को अपने लोगों से प्रशंसा, महिमा और भक्ति का एक छोटा सा हिस्सा मिल सकता है जिसका वह हकदार है। साथ ही, तथ्य यह है कि क्रॉस और खाली कब्र की कई तस्वीरें हैं जो ज़रूरतमंद लोगों की सेवा करने के लिए परमेश्वर का प्रावधान है क्योंकि कभी-कभी उन तस्वीरों में से एक किसी के लिए अधिक सहायक होती है, या तो एक खोए हुए व्यक्ति के रूप में या एक संघर्षरत ईसाई के रूप में जिसे परमेश्वर की मदद की ज़रूरत है। मैं एक उदाहरण दूँगा।

जब मैं सेमिनरी प्रोफेसर था, तब मैं एक असाइनमेंट दिया करता था। यीशु की किसी घटना या उसके उद्धारक कार्य की किसी तस्वीर को चुनें और बताएं कि यह आपकी पिछली सेवकाई स्थिति में या, प्रभु की इच्छा से, भविष्य में आपकी किस तरह मदद करेगी। मेरे पास सेंट लुइस के अंदरूनी शहर में विभिन्न पृष्ठभूमियों के बच्चों के साथ सेवकाई करने वाला एक छात्र था, और उसने यीशु के पापरहित जीवन और दूसरे आदम के रूप में मसीह की तस्वीर को चुना।

उन्होंने कहा कि मेरे संडे स्कूल क्लास या उनके युवा समूह में सभी बच्चे, चाहे वे कोई भी हों, सभी मानते थे कि यीशु ईश्वर थे, और वे उनसे डरते थे। वे उनसे जुड़ नहीं पाते थे। उन्होंने कहा, लेकिन जब हमने इस तथ्य का अध्ययन किया कि यीशु को प्रलोभन दिया गया और प्रलोभन के दौरान उन्हें पीड़ा हुई, लेकिन उन्होंने कभी प्रलोभन के आगे घुटने नहीं टेके, तो उनमें यीशु के लिए एक नया सम्मान पैदा हुआ, और वे उनके करीब महसूस करने लगे, उनसे जुड़ने में सक्षम हो गए, क्योंकि उन्होंने कहा कि वे हमसे जुड़ सकते हैं।

वह वास्तव में हम में से एक बन गया। और वह दूसरे आदम की नई सृष्टि की कल्पना में उनके सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने में सक्षम था। जैसे कि यीशु मरा और जी उठा, उन्हें उस पर भरोसा करने की ज़रूरत थी क्योंकि वह मरा और जी उठा, और वे उसे अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में जानते थे।

उसने वास्तविक फलदायीता देखी। विडंबना यह है कि उसे इसकी बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी। उसे मसीह के ईश्वरत्व के लिए तर्क करने की ज़रूरत नहीं थी।

वे मानते थे कि यीशु परमेश्वर थे, और इस कारण, वे उनसे बहुत दूर महसूस करते थे। वे अप्राप्य थे, लेकिन जब उन्होंने उनकी मानवता और उनके प्रलोभन के बारे में सोचा, तो उन्हें लगा कि वे उनके करीब हैं। पापहीनता में उनके परिणाम ने उन्हें उद्धार के अद्वितीय स्रोत के रूप में उनके क्रूस की ओर इशारा किया, न केवल दुनिया के लिए बल्कि उनके अपने उद्धार के लिए भी, क्योंकि ये युवा लड़के मसीह की ओर मुड़े, जो दुनिया के दूसरे और अंतिम आदम और उद्धारक हैं।

हम मसीह के कार्य के बारे में और अधिक बात करेंगे क्योंकि यह मसीह की मृत्यु है जो उनके उद्धार कार्य का प्रतीक है, जब हम उन चित्रों के बारे में बात करते हैं कि उन्होंने हमें कैसे बचाया, तो इसे कभी भी खाली कब्र से अलग नहीं किया जा सकता है। इसलिए, मैं अब मसीह की मृत्यु पर अधिक विस्तार से नहीं बोलूंगा, लेकिन हम इसे उन छह चित्रों के संदर्भ में विचार करेंगे। व्यवस्था, विजय, मुक्ति, मेल-मिलाप, दूसरे आदम और पुरोहिती बलिदान का चित्र भी।

तो, हम मसीह के पुनरुत्थान की ओर बढ़ते हैं, जिसके बारे में हम इस प्रश्न का उत्तर देने के मामले में उतने परिचित नहीं हैं, कि उनके कार्य का यह पहलू हमें कैसे बचाता है? प्रसिद्ध ब्रिटिश न्यू टेस्टामेंट विद्वान हॉवर्ड मार्शल ने ये शब्द लिखे। यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि मसीह की मृत्यु के धर्मशास्त्र पर कई मोनोग्राफ हैं, लेकिन उनके पुनरुत्थान के धर्मशास्त्र पर तुलनात्मक रूप से बहुत कम हैं। लेखन के बाद के समूह में, ध्यान मुख्य रूप से मसीह के पुनरुत्थान की ऐतिहासिकता और विश्वासियों के भविष्य के पुनरुत्थान के संबंध में इसके महत्व पर केंद्रित है।

विश्वासियों के वर्तमान नए जीवन के संबंध में पुनरुत्थान की भूमिका पर भी ध्यान केंद्रित किया जाता है, लेकिन यह कैसे एक उद्धारक घटना है, इस पर ध्यान नहीं दिया जाता है। वास्तव में, यह एक उद्धारक घटना नहीं है। उनके शब्द सत्य प्रतीत होते हैं।

मैं अपनी निजी लाइब्रेरी में 50 से ज़्यादा किताबें गिन सकता हूँ जो मसीह के क्रूस के प्रायश्चित्त से संबंधित हैं, और बहुत कम, शायद मैं एक हाथ की उंगलियों पर गिन सकता हूँ, जो उनके पुनरुत्थान के बचाने वाले महत्व से संबंधित हैं। प्रभु यीशु मसीह का पुनरुत्थान बचाता है। उनके बचाने वाले काम का मूल उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान है।

जब पौलुस 1 कुरिन्थियों 15 में सुसमाचार का सारांश देता है, तो वह दोनों को शामिल करता है, उद्धारण, क्योंकि मैंने तुम्हें सबसे पहले वही पहुँचा दिया जो मुझे प्राप्त हुआ था, कि मसीह हमारे पापों के लिए मर गया, कि वह गाड़ा गया और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी उठा। 1 कुरिन्थियों 15, 3 और 4. ध्यान दें कि मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान दोनों ही पवित्रशास्त्र के अनुसार हैं और सुसमाचार में दोनों शामिल हैं। यीशु का पुनरुत्थान बचाता है।

यह आम बात नहीं है, इसलिए इसे समझना आपके लिए ज़्यादा मुश्किल हो सकता है। इसलिए, मैं इन अंशों को समझाने में ज़्यादा समय लूँगा, जितना कि मुझे यह समझाने में लगेगा कि उनकी मृत्यु ने कैसे बचाया। अवलोकन। मसीह का पुनरुत्थान औचित्य और क्षमा लाता है।

आप शायद मुझे यह कहते हुए सुनकर थक गए होंगे, लेकिन मैं इसे कहना जारी रखूँगा। अपने क्रूस से अलग नहीं, बल्कि अपने क्रूस के साथ, मसीह का पुनरुत्थान औचित्य और क्षमा लाता है। नंबर दो, कम से कम एक अंश में, यह परमेश्वर के साथ शांति स्थापित करता है।

यह निश्चित रूप से उनकी मृत्यु के साथ मेल-मिलाप का आधार या आधार है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि आप नाकों की गिनती करते हैं, यदि आप अंशों की गिनती करते हैं, तो मसीह का पुनरुत्थान इस प्रश्न के उत्तर में प्रमुख सत्य है कि यीशु का पुनरुत्थान कैसे बचाता है? इसका उत्तर यह है कि क्रूस पर चढ़ाया गया और अब जी उठा व्यक्ति परमेश्वर की नई सृष्टि का उद्घाटन करके बचाता है। उसके पुनरुत्थान के परिणामस्वरूप अब पुनर्जन्म और नई पृथ्वी पर अनंत जीवन के लिए हमारा भविष्य का पुनरुत्थान दोनों।

पुनरुत्थान और पुनरुत्थान शरीर में परिवर्तन यीशु के पुनरुत्थान का परिणाम है। इस तरह उसका पुनरुत्थान हमें बचाता है। यह औचित्य और क्षमा और मेल-मिलाप लाता है, और यह नई सृष्टि का उद्घाटन करता है।

यीशु का पुनरुत्थान औचित्य और क्षमा लाता है। जब पौलुस रोमियों में परमेश्वर द्वारा पापियों को धर्मी घोषित करने का आधार देता है, तो वह मुख्य रूप से मसीह के क्रूस की ओर संकेत करता है। हमने इसे रोमियों 3:25-26 में देखा, जहाँ परमेश्वर ने मसीह यीशु को उसके लहू के द्वारा प्रायश्चित्त के रूप में आगे रखा।

रोमियों 5:18-19 में, औचित्य का आधार मसीह की मृत्यु तक आज्ञाकारिता है, क्रूस पर उसका धार्मिकता का एक कार्य। जब पौलुस औचित्य की बात करता है तो वह क्रूस पर ध्यान केंद्रित

करता है, लेकिन यीशु के पुनरुत्थान को नहीं छोड़ता। रोमियों के एक अंश में, प्रेरित कूस और खाली कब्र को एक साथ लाता है।

धार्मिकता, उद्धरण, हम में गिनी जाएगी जो उस पर विश्वास करते हैं जिसने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुआओं में से जिलाया, जो हमारे अपराधों के लिए पकड़वाया गया और हमारे औचित्य के लिए जिलाया गया। रोमियों 4:23 से 25. यहाँ, हमारे अपराधों और हमारे औचित्य से निपटना दो अलग-अलग आशीषें नहीं हैं, बल्कि एक ही बात के बारे में बात करने का एक तरीका है।

क्योंकि औचित्य को विश्वास करने वाले पापी पर धार्मिकता के सकारात्मक आरोपण के रूप में व्यक्त किया जा सकता है, रोमियों 4:3 से 5, अन्य अंशों के साथ। इसे विश्वास करने वाले पापी पर पाप के गैर-आरोपण के रूप में भी व्यक्त किया जा सकता है, रोमियों 4:6 से 7। इसलिए जब पौलुस कहता है कि यीशु को हमारे अपराधों के लिए सौंप दिया गया था, तो उसका मतलब है कि हमारे औचित्य के लिए उसकी प्रायश्चित मृत्यु आवश्यक थी। जब वह कहता है कि यीशु को हमारे औचित्य के लिए उठाया गया था, तो उसका मतलब है कि हमारे औचित्य के लिए यीशु का विजयी पुनरुत्थान आवश्यक था।

पापियों को पवित्र परमेश्वर के समक्ष धर्मी ठहराए जाने के लिए यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान दोनों आवश्यक हैं। यीशु की मृत्यु हमारे धर्मी ठहराए जाने का आधार है क्योंकि वह, हमारा प्रतिस्थापन, हमारे स्थान पर मर गया और उस दंड को चुकाया जिसे हम कभी नहीं चुका सकते। वह हमारे पुनर्जीवित प्रभु और प्रतिनिधि के रूप में भी कार्य करता है।

वह अपने पुनरुत्थान में हमारा स्थानापन्न नहीं है। वह हमारे स्थान पर नहीं जी उठा है, बल्कि वह हमारे प्रभु के रूप में हमारा प्रतिनिधित्व करता है। वह वही है जो हमारे लिए जीता है।

यह कम से कम दो अर्थों में सच है। मैं इसे स्पष्टता के साथ कह सकता हूँ: यह समझना बहुत आसान है कि यीशु की मृत्यु हमें कैसे औचित्य में बचाती है, बजाय इसके कि उसका पुनरुत्थान कैसे करता है। लेकिन पॉल कहते हैं, रोमियों 4, 25, और हमें इसके साथ काम करने और इसे समझने की कोशिश करने की ज़रूरत है।

दो अर्थ। सबसे पहले, मसीह का पुनरुत्थान उसकी मृत्यु की प्रभावकारिता की गवाही देता है, एक सच्चाई जो हम पहले से ही जानते थे, जैसा कि मैंने पहले कहा था। जैसा कि महान रोमन टिप्पणीकार सीईबी क्रैनफील्ड बताते हैं, "हमारे पाप के कारण जो आवश्यक था, वह सबसे पहले, मसीह की प्रायश्चित मृत्यु थी।

और फिर भी, अगर उसकी मृत्यु के बाद उसका पुनरुत्थान न हुआ होता, तो यह हमारे औचित्य के लिए परमेश्वर का महान कार्य नहीं होता। दूसरा, यीशु का पुनरुत्थान हमें बचाता है क्योंकि जो हमारे लिए मरा, उसे परमेश्वर ने मृत्यु से मुक्त कर दिया है। उसकी उद्धारक मृत्यु और उद्धारक पुनरुत्थान ही वे कारण हैं जिनके कारण परमेश्वर हमें भी मृत्यु से मुक्त करेगा।

जेम्स डन ने रोमियों पर अपनी टिप्पणी में स्पष्ट किया, "न्यायसंगतता और यीशु के पुनरुत्थान के बीच की कड़ी इस बात को रेखांकित करती है कि परमेश्वर का न्यायसंगत अनुग्रह उसकी

रचनात्मक, जीवन देने वाली शक्ति के साथ शांति है। जैसा कि हम देखेंगे, उसका पुनरुत्थान अंतिम दिन पर अनन्त जीवन के लिए हमारे पुनरुत्थान का आधार और गारंटी है। यीशु का पुनरुत्थान औचित्य लाता है।"

यह पापों की क्षमा भी लाता है। मैं फिर से 1 कुरिन्थियों 15 पर जा रहा हूँ। और यदि मसीह को नहीं जी उठाया गया है, 1 कुरिन्थियों 15, 17, तो आपका विश्वास व्यर्थ है, और आप अभी भी अपने पापों में हैं।

1 कुरिन्थियों 15:17. ऐसा क्यों होगा? एंथनी थिसलटन जवाब देते हैं, "मसीह के पुनरुत्थान के बिना, मसीह की मृत्यु अकेले मानव पाप के संबंध में कोई प्रायश्चित, मुक्ति या मुक्ति देने वाला प्रभाव नहीं रखती है।"

ऐसा इसलिए है क्योंकि यीशु, हमारा ईश्वरीय मानव प्रतिनिधि, न केवल हमारे स्थान पर मरा, बल्कि कब्र में पाप पर विजयी के रूप में भी जीवित है, इसलिए वह उन सभी को अंत तक बचाता है जो उसके माध्यम से परमेश्वर के पास आते हैं। यीशु ने स्वर्ग में एक याजकीय बलिदान दिया। इब्रानियों 7:23 , 25 में एक संबंधित सत्य सिखाया गया है।

पुराने नियम के पुजारियों के विपरीत, जो मर गए और उनके वंशजों ने उनका स्थान लिया, मसीह, उद्धारण, अपने पुरोहितत्व को स्थायी रूप से धारण करता है, इब्रानियों 7:24। क्यों? उद्धारण, क्योंकि वह हमेशा के लिए जारी रहता है, उद्धारण बंद करें, जी उठे हुए व्यक्ति के रूप में। परिणामस्वरूप, उद्धारण, वह उन लोगों को पूरी तरह से बचाने में सक्षम है जो उसके माध्यम से परमेश्वर के निकट आते हैं, क्योंकि वह हमेशा उनके लिए मध्यस्थता करने के लिए जीवित रहता है।

नज़दीकी उद्धारण, इब्रानियों 7:25. जब पौलुस कहता है, जब इब्रानियों का लेखक कहता है, पूरी तरह से बचाओ, इसका मतलब है हर समय के लिए और किसी भी अन्य तरीके से जिसे आप समझ सकते हैं। उसकी मृत्यु पूरी तरह से पर्याप्त है, अस्थायी रूप से और किसी भी अन्य तरीके से जिसे आप सोच सकते हैं।

यहाँ जिस मध्यस्थता की बात की गई है, वह संतों के लिए प्रार्थना करने की मसीह की स्वर्गीय सेवकाई नहीं है। रोमियों 8:34 में इसकी शिक्षा दी गई है। लेकिन इब्रानियों 7:25 की मध्यस्थता संतों के लिए मसीह की प्रार्थना को बाहर नहीं करती है, बल्कि इसका ध्यान कहीं और उसके खून को बहाकर पापों के लिए प्रायश्चित करने की उसकी पुरोहिताई सेवकाई पर है।

लेखक कहता है कि वह उन लोगों को पूरी तरह से बचाने में सक्षम है जो उसके माध्यम से परमेश्वर के निकट आते हैं क्योंकि वह हमेशा उनके लिए मध्यस्थता करने के लिए जीवित रहता है, इब्रानियों 7:23। उसका मतलब है कि यीशु अपने लोगों को हमेशा के लिए बचाता है क्योंकि वह स्वर्ग में परमेश्वर की उपस्थिति में लगातार अपना पुजारी बलिदान प्रस्तुत करता है। कलवरी के क्रूस पर उसने जो प्रायश्चित किया वह हमेशा के लिए काम आता है क्योंकि, एक पुनर्जीवित व्यक्ति के रूप में, वह एक अविनाशी जीवन की शक्ति से एक स्थायी पुजारी है।

यह एक उद्धारण है और वह हमेशा के लिए जारी है, इब्रानियों 7:16 और 24। एफएफ ब्रूस इस सत्य उद्धारण को रेखांकित करते हैं, यह सच है कि मसीह मर गया और उसकी मृत्यु मनुष्य के पापों के लिए आवश्यक पुजारी बलिदान थी, लेकिन उसकी मृत्यु उसके पुजारी पद की समाप्ति या उसके द्वारा किसी और के लिए संक्रमण का क्षण नहीं थी, जैसा कि लेवी के पुजारियों के लिए था, क्योंकि वह कब्र से उठ गया, मृत्यु पर विजयी हुआ, और अब हमारी आत्मा और हमेशा जीवित रहने वाले उच्च पुजारी के रूप में जारी है। यीशु हमारा महायाजक है जो अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा बचाता है।

इसके अलावा, मसीह का पुनरुत्थान परमेश्वर के साथ शांति स्थापित करता है। औचित्य और क्षमा लाने के अलावा, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान, जिस पर हम अभी जोर दे रहे हैं, परमेश्वर के साथ शांति भी लाता है। वे परमेश्वर के साथ शांति या मेल-मिलाप भी लाते हैं।

रोमियों 5:9 और 10 में पौलुस मसीह के कार्य के इस उद्धारक पहलू पर जोर देता है। पद 10 हमें बताता है, यदि शत्रु होने पर भी उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, तो अब जब हमारा मेल हो गया है, तो उसके जीवन के द्वारा हम उद्धार क्यों न पाएंगे। यहाँ, पौलुस मेल-मिलाप को मसीह की मृत्यु के रूप में बताता है, और वह अंतिम उद्धार को उसके पुनरुत्थान वाले जीवन के रूप में बताता है।

हम मसीह की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान दोनों के द्वारा मेल-मिलाप करते हैं और अंततः बचाए जाते हैं। हालाँकि, यह स्पष्ट नहीं है कि मसीह का पुनरुत्थान कैसे बचाता है। टॉम श्राइनर हमारी मदद करते हैं, और मैं उनकी रोमियों की टिप्पणी से उद्धृत करता हूँ, मसीह का जीवन किस तरह से युगांतिक क्रोध से बचाता है? इस बिंदु पर रोमियों 5:1 से 11 और 8:18 से 39 के बीच समानताओं को याद करना शिक्षाप्रद है।

अधिक विशेष रूप से, 8:33 और 34 दो तर्क प्रस्तुत करते हैं कि क्यों विश्वासियों को आश्वस्त किया जा सकता है कि न्याय के दिन उन्हें दोषी नहीं ठहराया जाएगा। पहला कारण यह है कि परमेश्वर ने औचित्य सिद्ध कर दिया है, और वह उन लोगों पर आरोप नहीं लगाएगा जिन्हें उसने निर्दोष ठहराया है। दूसरा, विश्वासियों को आश्वस्त किया जाता है कि वे दण्ड से बच जाएँगे, क्योंकि उनके लिए, मसीह मरा, जीवन और मृतकों में से जी उठा, और मध्यस्थता करता है।

इसी तरह, 5:10 में, हमारा वर्तमान अंश, मसीह का जीवन, संभवतः उनके पुनरुत्थान और विश्वासियों के लिए उनके मध्यस्थता कार्य दोनों को निर्दिष्ट करता है। मुझे यकीन है कि यह कम से कम पहले वाले, उनके पुनरुत्थान, या शायद बाद के दो को निर्दिष्ट करता है। श्राइनर कहते हैं कि मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान का संदर्भ, 4.25 को भी याद दिलाता है, जहाँ मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान दोनों ही विश्वासियों के औचित्य के घटक तत्व हैं।

उद्धार को प्रभावित करने में मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान अविभाज्य हैं। श्राइनर सही है। हमें उन चीज़ों को अलग नहीं करना चाहिए जिन्हें परमेश्वर ने एक साथ रखा है, और उसने मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान को अविभाज्य रूप से एक साथ रखा है।

कभी-कभी शास्त्र यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान दोनों का उल्लेख करता है। रोमियों 5:10 में ऐसा ही है, जो उनकी मृत्यु और उनके जीवन के लिए अंतिम उद्धार दोनों को मेल-मिलाप का श्रेय देता है। उनका पुनरुत्थान हमें आखिर में कैसे बचाता है? इसका उत्तर यह है कि हम पहले ही जो चर्चा कर चुके हैं, उसका अभ्यास करें।

उनका पुनरुत्थान औचित्य और क्षमा का आश्वासन देता है और मसीह के स्थायी पुरोहितत्व की गारंटी देता है। उत्तर अगले भाग की भी आशा करता है, जो उद्धार में मसीह के पुनरुत्थान के मुख्य महत्व पर प्रकाश डालता है, जो यह है। वह, अपने पुनरुत्थान में, नई सृष्टि और उसके साथ आने वाली सभी चीजों का उद्घाटन करता है जो अभी और भविष्य में आती हैं।

नोट्स का यह अगला भाग, मसीह का पुनरुत्थान, एक नई रचना का उद्घाटन करता है, जो मेरी पुस्तक, *मसीह के उद्धार कार्य, पुत्र के माध्यम से उद्धार*, मसीह के उद्धार कार्य से लिया गया है। अपराध में मेरा साथी, मैं उसे बुलाता हूँ, मेरा लेखन साथी, क्रिस्टोफर मॉर्गन, हमने उन पुस्तकों का ट्रैक खो दिया है जो हमने वर्षों से एक साथ की हैं। कुछ श्रृंखलाओं और अन्य परियोजनाओं में प्रभु की सेवा करने के लिए प्रभु का धन्यवाद।

मैं इसे यहीं छोड़ता हूँ। लेकिन वह बहुत होशियार आदमी है। उसे मत बताना कि मैंने यह कहा है, लेकिन वह मुझसे ज़्यादा होशियार है।

फोटोग्राफिक मेमोरी के साथ, जो मेरे वर्तमान लेखन साथी, वैन लीस के पास भी है। वह आदमी कैसा है? भगवान, मुझे इन लोगों के साथ रखो। मुझे नहीं पता।

वैसे भी, वे अच्छे भाई हैं, और हमारे बीच अच्छी संगति है। लेकिन मॉर्गन एक होशियार व्यक्ति है। और एक बार उसने मुझे बताया कि यह सामग्री उसके लिए इतनी ताज़ा थी कि ईस्टर के उपदेशों की तैयारी में, उसने इस सामग्री को पढ़ा, जिसका मैं आपको मुख्य अंश उद्धृत करने जा रहा हूँ, मुख्य अंश, तीन बार, ताकि वह इसे समझ सके, इसे अपने दिमाग में बिठा सके, क्योंकि यह बहुत नया था।

हालाँकि हम क्षमाप्रार्थी के रूप में यीशु के पुनरुत्थान की पुष्टि करते हैं, हम उदारवाद द्वारा उनके पुनरुत्थान को नकारने का विरोध करते हैं। हालाँकि हम सही ढंग से कहते हैं कि यह मसीह के क्रूस की प्रभावकारिता को दर्शाता है और प्रदर्शित करता है, पौलुस पतरस को भी प्रस्तुत करता है। यीशु का पुनरुत्थान अपने आप में एक उद्धारक घटना है, जो निश्चित रूप से उनके क्रूस से अविभाज्य है।

कई वर्षों तक अंतिम बातों को पढ़ाने के बाद, मेरी एक कहावत, मेरी एक कहावत यह है कि अंतिम बातों का हर मुख्य पहलू, जिसका अध्ययन एस्केटोलॉजी कहलाता है, एस्केटोलॉजी का हर मुख्य पहलू पहले से ही है और अभी तक नहीं है। इसका मतलब है कि अंतिम बातों का हर मुख्य पहलू, उद्धार, न्याय, अनन्त जीवन, मसीह विरोधी, जो कुछ भी आप सोच सकते हैं, पुनरुत्थान दोनों आंशिक रूप से अब साकार हो चुका है और मसीह की वापसी के बाद अंतिम दिन एक बड़े अर्थ में पूरा हो चुका है। और ऐसा ही नई सृष्टि के साथ भी है।

पूर्ण अर्थों में केवल नया स्वर्ग और नई पृथ्वी होगी, अभी नहीं, मसीह की वापसी में, और उसके साथ होने वाली घटनाओं में। लेकिन नई सृष्टि की शुरुआत यीशु के मृतकों में से जी उठने से हुई थी, और विश्वासियों ने इसके परिणामों का अनुभव अब पुनर्जन्म में किया है। पिछली चीजों के हर दूसरे प्रमुख पहलू की तरह, नई सृष्टि पहले से ही मौजूद है, वर्तमान में पूरी हो चुकी है, और यहाँ तक कि विश्वासियों द्वारा अनुभव भी की गई है, और अभी तक नहीं।

यह अभी भी अपने पूर्ण अर्थ में पूरा होना बाकी है। जॉन, पीटर और पॉल एक संगीत समूह या एक पुराने संगीत समूह की तरह लगता है ; जॉन, पॉल और पीटर, पीटर, पॉल और मैरी सभी सिखाते हैं, मैरी नहीं, सभी सिखाते हैं कि यीशु का पुनरुत्थान अब पापियों के लिए पुनर्जन्म में नया जीवन लाता है। आह, मुझे माफ करें।

किसी को भी अपने बुरे हास्य के प्रयास पर नहीं हंसना चाहिए। यूहन्ना, पौलुस और पतरस सभी सिखाते हैं कि यीशु का पुनरुत्थान पापियों को पुनर्जन्म में नया जीवन देता है। यूहन्ना 11:25, 26 में, यीशु ने अपने प्रसिद्ध, मैं कह रहा हूँ, वह मार्था से कहता है, मृत लाजर की बहन मार्था से अपने भयावह शब्दों को उद्धृत करते हुए कहा, मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ।

जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, चाहे वह मर भी जाए, फिर भी वह जीवित रहेगा। और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी नहीं मरेगा। इन आयतों को समझना मुश्किल है।

निश्चित रूप से, वे यीशु को जीवनदाता के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो चौथे सुसमाचार का एक प्रमुख विषय है। क्रूस पर चढ़ाए गए और जी उठे उद्धारकर्ता अपने लोगों और उन सभी को जो उस पर विश्वास करते हैं, एक उपहार के रूप में अनन्त जीवन प्रदान करते हैं। इस आयत की व्याख्या के संबंध में मुझे सीएच डोड और चौथे सुसमाचार पर उनकी टिप्पणी से सबसे अधिक मदद मिली है।

मैं पुनरुत्थान हूँ, यीशु ने कहा। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, चाहे वह मर भी जाए, फिर भी वह जीवित रहेगा। डोड ने कहा कि हमें इस आयत के दो भाग लेने चाहिए और 25 के पहले भाग को 26 के पहले भाग के साथ रखना चाहिए और दूसरे भाग के लिए भी ऐसा ही करना चाहिए।

इसे समझना आसान है, लेकिन समझना नहीं। मैं पुनरुत्थान हूँ, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, चाहे वह मर भी जाए, फिर भी वह जीवित रहेगा। यीशु उन विश्वासियों को जीवित करेगा जो शारीरिक मृत्यु का अनुभव करते हैं।

उसकी आवाज़ सुनकर वे अपनी कब्रों से बाहर निकल आएंगे, जीवन के पुनरुत्थान के लिए, यूहन्ना 5, 28, 29। वह जीवनदाता है जो अंतिम दिन अपने लोगों को पुनरुत्थान का जीवन देगा। इन शब्दों का यही अर्थ है।

मैं पुनरुत्थान हूँ, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, चाहे वह मर भी जाए, फिर भी वह जीएगा। इसी तरह के पैटर्न का पालन करते हुए, मैं जीवन हूँ। यूहन्ना 11, 25, 26 में से प्रत्येक के दूसरे भाग को लेते हुए, और उन्हें एक साथ रखते हुए, मैं जीवन हूँ।

जो कोई भी जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी नहीं मरेगा, उद्धारण समाप्त करें। जो लोग जीवन में यीशु पर भरोसा करते हैं, वे दूसरी मृत्यु, नरक का अनुभव नहीं करेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि जीवन देने वाला यीशु उन्हें अब उपहार के रूप में अनंत जीवन देता है।

जैसा कि उसने यूहन्ना 10 में कहा, "मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश नहीं होंगे। कोई भी उन्हें मेरे हाथ से नहीं छीन सकता। मेरा पिता जिसने उन्हें मुझे दिया है, वह सब से बड़ा है और कोई भी उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।"

भेड़ों को सुरक्षित रखने की हमारी क्षमता में मैं और पिता एक हैं, यूहन्ना 10:28 से 30. लाजर के बाहर आने के शब्दों के साथ, यीशु, पुनरुत्थान और जीवन, अपने मित्र को कब्र से उठाता है, इस बात के प्रमाण के रूप में कि वह अब अनन्त जीवन का दाता है और मृतकों को अनन्त जीवन में उठाने की अपनी शक्ति के प्रतीक के रूप में, अपने मित्र लाजर को पुनर्जीवित करता है। डीए कार्सन ने इन सच्चाइयों को पकड़ लिया, उद्धारण, जैसे यीशु न केवल स्वर्ग से रोटी देता है बल्कि स्वयं जीवन की रोटी है, यूहन्ना 6:27 और 35, वैसे ही वह न केवल अंतिम दिन मृतकों को उठाता है, 5:21, 5:25 और उसके बाद, बल्कि स्वयं पुनरुत्थान और जीवन है।

जॉन के सुसमाचार पर डीए कार्सन की अद्भुत टिप्पणी के अनुसार, जो कि चौथे सुसमाचार का मेरा अपना पसंदीदा धर्मशास्त्र है, उसके बाहर न तो पुनरुत्थान है और न ही अनंत जीवन। इफिसियों 2:4 से 7, भयानक मानवीय विद्रोह और पाप की पृष्ठभूमि के विरुद्ध, मैं दुनिया, शरीर और शैतान को हमारे शत्रुओं के रूप में दिखाने के लिए इफिसियों 2:1 से 3 से बेहतर कोई जगह नहीं जानता, लेकिन उस पृष्ठभूमि के विरुद्ध पौलुस कहता है, लेकिन परमेश्वर जो दया में धनी है, उस महान प्रेम के कारण जिससे उसने हमसे प्रेम किया, जब हम अपने अपराधों में मरे हुए थे, तब भी हमें मसीह के साथ जीवित कर दिया। यीशु हमें अपने पुनरुत्थान में अपने पुत्र के साथ आध्यात्मिक रूप से एकजुट करके अब आध्यात्मिक जीवन देता है।

मसीह के साथ एकता उद्धार के अनुप्रयोग के बारे में बात करने का सबसे व्यापक तरीका है। परमेश्वर आध्यात्मिक रूप से हमें अपने पुत्र से जोड़ता है ताकि उसके सभी उद्धारक लाभ हमारे हो जाएँ। नए आकाश और नई पृथ्वी का प्रकट होना मसीह के दूसरे आगमन की प्रतीक्षा कर रहा है।

यह अभी नहीं हुआ है, और यह मृतकों के पुनरुत्थान की प्रतीक्षा कर रहा है, जो अभी नहीं हुआ है, लेकिन क्योंकि यीशु मर गया और फिर से जी उठा, परमेश्वर ने पहले ही पापियों को पुनर्जीवित कर दिया है। वह उन्हें अब आने वाले युग की विशेषता वाला अनन्त जीवन देता है। इसलिए, विश्वासी विसंगतियाँ हैं।

रोमियों 8 के अनुसार, हमारे पास नश्वर शरीरों में अनन्त जीवन है, मरने वाले शरीरों में अनन्त जीवन है। यह वैसा नहीं है जैसा कि होना चाहिए, लेकिन यह निश्चित रूप से नश्वर शरीरों में अनन्त जीवन न होने से बेहतर है। मृतकों के पुनरुत्थान में, हमें अमर शरीरों में अनन्त जीवन मिलेगा।

जब अद्भुत परिवर्तन, पुनरुत्थान का मुख्य शब्द घटित होता है। जिस दिन यीशु फिर से आएगा, यीशु के पुनरुत्थान के कारण, परमेश्वर हमारे दीन शरीरों को बदल देगा, फिलिप्पियों 3:20 और 21, ताकि वे महिमा, शक्ति और अमरता में परमेश्वर के पुत्र के पुनरुत्थान शरीर के समान हो जाएँ। फिलिप्पियों की वह आयत वास्तव में उस कार्य का श्रेय यीशु को देती है, जिसके पास सभी चीजों को अपने अधीन करने की शक्ति है।

1 पतरस 1:3 में, स्तुति के बीच में, पतरस पिता और पुत्र को पुनर्जन्म की भूमिका सौंपता है। अन्यत्र, शास्त्र वचन को जिम्मेदार ठहराता है और आत्मा को पुनर्जन्म की भूमिका सौंपता है। तीनों एक भूमिका निभाते हैं।

सबसे पहले, पिता, धन्य हो, पतरस लिखता है, हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर और पिता, अपनी महान दया के अनुसार, उसने हमें एक जीवित आशा के लिए फिर से जन्म दिया है। पिता दया में योजना बनाता है और अपनी इच्छा और अपनी दया के कारण हमारे पुनर्जन्म का कारण बनता है कि हम फिर से जन्म लें। पिता हमारे पुनर्जन्म की योजना बनाता है, उद्धृत करें, मृतकों में से यीशु मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से, 1 पतरस 1:3। यह यीशु का पुनरुत्थान है जो दिव्य शक्ति को मुक्त करता है जो हमारे पुनर्जन्म को नए जीवन का कारण बनता है।

उसका पुनर्जीवित जीवन उस अनन्त जीवन का स्रोत है जिसे आत्मा हम पर लागू करती है, हालाँकि पतरस ने वहाँ आत्मा का उल्लेख नहीं किया है। आत्मा इसे लागू करती है। पिता पुनर्जन्म की योजना बनाता है।

बेटे का पुनरुत्थान, बेटा ही डायनेमो है। उसका पुनरुत्थान नए जीवन की शक्ति है। और आत्मा वास्तव में उस जीवन को हम पर लागू करती है।

वह हमें जीवित करता है। वह हमें परमेश्वर के पास जीवित लाता है, परमेश्वर की योजना को पूरा करता है, और हम परमेश्वर के पास जीवित हो जाते हैं क्योंकि आत्मा हमें यीशु के पुनरुत्थान जीवन के साथ जीवित करती है। पीटर डेविड्स, सामान्य पत्रों के विशेषज्ञ, 1 पतरस 1:3 पर बोलते हैं। वह अनमोल सत्य, एक उद्घरण बोलता है, क्योंकि यीशु वास्तव में मृत्यु के द्वार तोड़ता है और अब हमारे जीवित प्रभु के रूप में मौजूद है।

जो लोग उसके प्रति समर्पित हैं, वे उसके नए जीवन में हिस्सा लेते हैं और भविष्य में उसमें पूरी तरह से भाग लेने की उम्मीद कर सकते हैं। इसलिए, यीशु, पौलुस और पतरस, प्रत्येक मसीह को चित्रित करते हैं, प्रत्येक बिंदु जो वे चित्रित कर सकते हैं, लेकिन वे मसीह के मृतकों में से पुनरुत्थान को भी विश्वासियों के वर्तमान अनन्त जीवन के स्रोत के रूप में इंगित करते हैं। क्योंकि यीशु ने हमसे प्रेम किया, हमारे लिए खुद को दे दिया, और मृतकों में से जी उठकर मृत्यु पर विजय प्राप्त की, इसलिए अब हम पुनर्जीवित हो गए हैं।

अर्थात्, ऐसा लगता है कि नई सृष्टि पहले से ही परमेश्वर की कृपा से उसके लोगों के जीवन में विश्वास के माध्यम से साकार हो चुकी है। यह अभी तक नई सृष्टि की प्रत्याशा है, अर्थात्, अंतिम

उद्धार के लिए भविष्य के पुनरुत्थान की, जो यीशु के पुनरुत्थान का परिणाम भी है। हम अपने अगले व्याख्यान में इस तथ्य पर विचार करेंगे कि यीशु ने हमारे पुनरुत्थान का कारण बना।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा मसीह के उद्धार कार्यों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 11, उद्धारकारी घटनाएँ, भाग 3, मुख्य घटनाएँ, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान है।